प्रस्तावना-

आज हमारे बीच समाचारों से लेकर फैशन और लाइफ स्टाइल तक तरह-तरह के कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले सैकड़ों टेलीविजन चैनल हैं। निजी एफ. एम. रेडियो और सामुदायिक रेडियो ने श्रव्य इलेक्ट्रानिक माध्यम में क्रांति ला दी है। पत्र-पत्रिकाओं की तादाद और विविधता में बढ़ोत्तरी हुई है। पारंपरिक मीडिया के अलावा ब्लॉगिंग, ट्वटरिंग, मोबाइल संदेशों के उदय और प्रसार ने समाचार संकलन और उपयोग का स्वरूप पूर्णतया बदल दिया है और आम नागरिकों को इस प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार बना दिया है।

सूचना क्रांति के दौर में जनसंचार अब पहले से ज्यादा ताकतवर हो गये हैं। इसका प्रभाव क्षेत्र भी बढ़ गया है और साक्षरता बढ़ने के कारण यह अब अधिक लोगों तक पहुँचने लगा है। क्षेत्रीय चैनलों और समाचार पत्रों के विस्तार और विकास के कारण भी संचार माध्यमो की पहुँच पहले से अधिक बढ़ी है।'

अवधारणात्मक विश्लेषण-

संचार मनुष्य की स्वाभविक प्रवृत्ति है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य संचार की इस स्वाभाविक क्रिया का संचालन कभी स्वयं तो कभी समाज के साथ सम्बन्ध स्थापित करके सम्पादित करता है। अपने मन में चिन्तन-मनन करना, अपने से बात करना और अपने में खो जाना, अपने आप हँसना अथवा रोना-ये सब क्रियाएँ मानवीय संचार का एक स्वरूप हैं। मनुष्य स्वयं से हटकर परिवार के बीच भी संचार का प्रयोग करता है। परिवार के बाहर भी संचार-प्रक्रिया मनुष्य के जीवन में कई स्तरों पर व्यवहार में आती है। संचार के प्रत्येक परिवार स्तर का निरूपण ही संचार के वर्गीकरण का आधार है। संचार-विज्ञान एक सामाजिक विज्ञान है। इसके अध्ययन एवं विवेचन का आधार पूर्णतः सामाज ही है। समाज के जिन रूपों के साथ सम्पर्क स्थापित करके मनुष्य संचार करता है।

जनसंचार वह संचार है, जिसमें सन्देश / सूचना विस्तृत क्षेत्र में बिखरे लोगों तक जनसंचार माध्यमों (समाचार पत्र, रेडियों, टेलिविजन) के द्वारा पहुँचता है। इस प्रकार जनसंचार विस्तृत क्षेत्र मे फैले श्रोताओं तक एक समय में जनमाध्यमों द्वारा सूचना सम्प्रेषित करने की प्रक्रिया है।

आज जनसंचार के विकास ने भौगोलिक एवं समय की सीमा को तोड़ दिया है। आज मोबाइल पर एस.एम.एस. के जरिए जनंसचार माध्यमों के प्रोग्राम 'इंडियन आइडल' में इंडियन आइडल चुनने में लोगों की फीडबैक एस. एम. एस. जरिये लेकर निर्णय लिया गया। अपनी टी. आर.पी. बढ़ाने के लिए आज लगभग प्रत्येक चैनल जनता की भागीदारी अधिक से अधिक बढाकर लोकप्रिय होना चाहता है। रेडियो के एफ.एम. चैनल ने भी आज लोगो तक सीधा सम्पर्क स्थापित करके मनोरंजन के क्षेत्र में प्रमुख शहरों में शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति लाने का प्रयास किया है। कभी कहा जाता था कि रेडियो के दिन अब लद गए परन्तु उसी रेडियो को एफ.एम. चैनल ने आम आदमी को अपने साथ

जोड़ा। इसलिए आज जनसंचार तकनीकी एवं संस्थागत आधार पर आधारित विशाल समूह तक सूचना के संग्रह एवं प्रेषण पर आधारित प्रक्रिया है। वर्तमान समाज में इसका चरित्र सूचना-सम्प्रेषण, विश्लेषण, ज्ञान एवं मूल्यों को प्रसार तथा मनोरंजन करना है।'

अध्ययन का उद्देश्य-

जनसंचार का प्रवाह अति व्यापक एवं असीमित है। सन्देश का अस्तित्व जनसंचार माध्यमों से अलग नहीं है। वर्तमानकाल में राजनीतिक शक्ति, अर्थ, शिक्षा आदि का संप्रेषण जनसंचार माध्यमों पर आधारित है। इसलिए आज जनसंचार माध्यम और समाज में गहरा और निकट सम्बन्ध है। इसी के द्वारा समाज की मनोदशा, विचार, संस्कृति एवं जीवन-दिशाएं नियंत्रित तथा निर्देशित हो रही है। जनसंचार के द्वारा व्यक्तियों के समाजीकरण की प्रक्रिया समाज में चलती रहती है।

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं-

१. मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक जीवन का अध्ययन करना।

२. मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत ग्रामीण महिलाओं पर समाचार-पत्रों के प्रभाव का अध्ययन करना।

३. मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक जीवन पर मोबाइल के प्रभाव का अध्ययन करना।

४. अध्ययनरत ग्रामीण महिलाओं को इंटरनेट के उपयोग की जानकारी देना।

अध्ययन क्षेत्र-

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र मझगंज विकासखण्ड की भौगोलिक स्थिति मध्यप्रदेश के बघेलखण्ड क्षेत्र के रीवा जिले के उत्तरी पूर्वी सीमा पर 24°30' से 24°59'' उत्तरी अक्षांश तथा 81° 35'' से 81°55' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। अत: यह मध्यप्रदेश के उत्तरी पूर्वी भाग है। जो अपना अलग अस्तित्व बनाये हुए है, मऊगंज विकासखण्ड का धरातलीय विन्यास अत्यन्त ही विषम है। मऊगंज विकासखण्ड के उत्तरी भाग को विन्ध्य श्रेणियो ने सीमाबद्ध किया है, इसका पूर्वी भाग मे पूर्वी उच्च भूमि द्वारा आबद्ध है। जो मऊगंज विकासखण्ड की पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है। इस विकासखण्ड के दक्षिण मे पूर्व से पश्चिम की ओर फैली पर्वत श्रंखलाएँ है, जो विन्ध्य श्रेणी का ही अंग है, जो मऊगंज विकासखण्ड की दक्षिणी सीमा बनाती है, तथा इसके पश्चिम मे रीवा की उच्च भूमि पश्चिमी सीमा निर्धारित करती है। इन भागो के मध्य विस्तृत भू-भाग मऊगंज विकासखण्ड कहलाता है।

इसका उत्तर से दक्षिण मे चौड़ाई 33.c89 किमी. तथा परिश्चम से पूर्व 67.578 किमी. है। मऊगंज विकासखण्ड का क्षेत्रफल 2283.393 वर्ग किमी. है। यह भाग सागर तल से 4234 फुट की

ऊँचाई पर स्थित है। यह रीवा के पठार का सबसे ऊँचा भाग है। यह विकासखण्ड कर्क रेखा के पास ही है। कर्क रेखा इस के दक्षिण से होकर गुजरती है। इसलिए इस भाग की जलवायु महाद्वीपीय जलवायु है।

यह विकासखण्ड रीवा जिले के उत्तरी पूर्वी भाग मे स्थित है। इसके उत्तरी सीमा में उत्तर प्रदेश का इलाहाबाद जिला, उत्तर पश्चिम मे रीवा जिले की त्योंथर विकासखण्ड, पश्चिम मे सिरमौर विकासखण्ड, दक्षिण में सीधी जिला तथा पूर्व में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले तक विस्तार है।

पूर्व साहित्य की समीक्षा-

शोध कार्य में अतीत में किये गये कार्यों एवं विचारों को नवीन शोध से जोड़ने का प्रयास किया जाता है। वास्तव में सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए प्रत्येक शोधार्थी को पूर्व में किये कार्यों का समुचित ज्ञान आवश्यक होता है। जिससे जिन बिन्दुओं पर शोधकार्य नहीं हुआ है, उनका अध्ययन करके शोध की परिधि में लाया जा सके तथा जिन बिन्दुओं पर शोध कार्य हो चुका है उनके वास्तविक स्वरूप को जान सके। यदि शोधार्थी पूर्व में किये शोध कार्य को ही दोहराता है तो वह अध्ययन औचित्यविहीन तथा अप्रासंगिक हो जाता है। जब कोई शोध सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा पर आधारित नहीं होता है तो यह पृथक अस्तित्व वाला हो जाता है, जब कोई शोध सम्बन्धित साहित्य पर आधारित होता है तो हम शोध द्वारा अपनी समस्या के समाधान के लिए पूर्ण रूप से संकलित विधियों की आशा कर सकते हैं। जनसंचार माध्यमों पर कई शोध कार्य हुए हैं, संक्षेप में कुछ शोध संदर्भ निम्नलिखित हैं-

जार्ज ए. मिलर ने अपने शोध में पाया कि जनसंचार विशाल तथा विषम होता है, लोगों तक एक साथ संदेश संचार माध्यमों के द्वारा पहुँचाया जाता है। मित्तल जे.एस. ने अपने अध्ययन में बताया है कि जनसंचार के टेलीविजन स्वरूप ने दृश्य माध्यमों को इतना सुलभ बना दिया है कि किसी भी घटना की जानकारी पूरे विश्व में तुरन्त फैलायी जा सकती है।

जवरीमलल पारख ने 'जनसंचार के सामाजिक संदर्भ' में बताया है कि जनसंचार के कई पहलुओं और सामाजिक संदर्भों को छूती है, इनका मानना है कि जनसंचार माध्यमों का सम्बन्ध सामाजिक परिवर्तन से बहुत गहरा है। टी.एस. आलोक ने अपने शोध 'इलेक्ट्रानिक मीडिया' में बताया है कि स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रत्येक पत्रकार जो मीडिया से जुड़ते थे वे शब्दों के शिल्पी थे, एक-एक शब्द का प्रयोग बहुत सोच-विचार तथा पूर्ण सावधानी से करते थे।

शोध प्रविधि-

शोध विधियों से अभिप्राय वस्तुतः किसी विचारधारा अथवा अनुसन्धान को प्रस्तुत करने की वास्तविक विधि से होता है। जब भी हम किसी तथ्य, सिद्धान्त अथवा सत्य की खोज करते हैं तो उसे प्राप्त करने और संस्थापित करने के हमारे क्रियाकलाप इस ढंग से किए जाएँ जिनका अनुसरण करने से हमें वास्तविक तथ्य प्राप्त हो सकें। इसलिए अनुसन्धान करने हेतु सुनिश्चित विधियों का अनुसरण

करना पड़ता है, प्रयुक्त तरीकों को शोध विधियाँ कहते हैं। अनुसन्धान की विधियाँ प्रमाणिकता के साथ अध्ययन करने तथा अनुसन्धान सम्पन्न करने की वैज्ञानिक विधि होती है, जिसमें उपयुक्त प्रक्रियाओं, विधियों, उपरकरणों, गणितीय एवं सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से वस्तुस्थिति को स्पष्ट किया जाता है और सत्य की स्थापना की जाती है तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है।

इस प्रक्रिया में समस्या का चयन, तथ्यों का संकलन, प्राक्कल्पना की स्थापना, तथ्यों का विश्लेषण एवं सत्यापन तथा अन्य प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को अनुसन्धान की विधि कहते हैं।

वर्तमान शोध-पत्र में प्रयुक्त शोध विधि-

प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वप्रथम शोधार्थी ने शोध कार्य की सीमा तय की है, क्योंकि शोध कार्य अपने आप में एक विस्तृत और विशाल होता है। इसलिए शोध कार्य को एक सीमा में बांधने की आवश्यकता होती है। जिनमें सर्वप्रथम हमने मध्यप्रदेश राज्य के रीवा जिले के मऊगंज जनपद पंचायत को चुना है, मऊगंज जनपद पंचायत की १०० ग्रामीण महिलाओं को साक्षात्कार हेतु चुना गया है। साक्षात्कार से जो तथ्य प्राप्त हुए हैं वह निम्न सारणी के माध्यम से प्रस्तुत किए गए हैं।

सारणी क्रमांक 01

ग्रामीण महिलाओं पर समाचार-पत्रों का प्रभाव

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रभाव पड़ता है	51	51.00
2.	प्रभाव नहीं पड़ता है	34	34.00
3.	कह नहीं सकते	15	51.00
	योग -	100	100

उपरोक्त सारणी के माध्यम से मऊगंज जनपद पंचायत के अंतर्गत अध्ययनरत १०० ग्रामीण महिलाओं से समाचार-पत्रों का उनके जीवन पर प्रभाव को जानने की कोशिश की गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ५१.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ मानती हैं कि समाचार-पत्रों से देश-विदेश में क्या हो रहा है उसकी जानकारी उन्हें मिल जाती है, जिससे उनके जीवन में प्रभाव पड़ता है तथा ३४.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं के अनुसार उनके जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, इसी प्रकार ४५.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने इस विषय पर अपने मत स्पष्ट नहीं किए। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर समाचार पत्र अपनी छाप छोड़ रहा है।

सारणी क्रमांक 02

ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक जीवन पर मोबाइल का प्रभाव

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	मोबाइल का प्रभाव पड़ता है	80	80.00
2.	प्रभाव नहीं पड़ता है	13	13.00
3.	जवाब न देने वाली महिलाएँ	07	07.00
	योग -	100	100

उपरोक्त सारणी के माध्यम से मऊगंज जनपद पंचायत के अंतर्गत अध्ययनरत १०० ग्रामीण महिलाओं से मोबाइल का उनके जीवन पर प्रभाव को जानने की कोशिश की गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ८०.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ मानती हैं कि मोबाइल से उनके जीवन शैली पर फर्क पड़ा है, मोबाइल के आ जाने से दूर के रिश्तेदार भी नजदीक लगने लगे हैं, मोबाइल पर ही फिल्म या गाना सुनने को मिल जाता है, जिससे उनका मनोरंजन हो जाता है। ४३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने माना कि मोबाइल से उनके जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है तथा ७.०० प्रतिशत महिलाओं ने इस प्रश्न का कोई भी उत्तर नहीं दिया है। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर मोबाइल अपनी गहरी छाप छोड़ रहा है।

सारणी क्रमांक 03

ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक जीवन पर रेडियो का प्रभाव

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	रेडियों का प्रभाव पड़ता है	28	28.00
2.	रेडियों का प्रभाव नहीं पड़ता है	62	62.00
3.	जवाब न देने वाली महिलाएँ	10	10.00
	योग -	100	100

उपरोक्त सारणी के माध्यम से मऊगंज जनपद पंचायत के अंतर्गत अध्ययनरत ४०० ग्रामीण महिलाओं से रेडियो का उनके जीवन पर प्रभाव को जानने की कोशिश की गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि २८.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने माना कि रेडियो से उन्हें विभिन्न प्रकार की जानकारी जैसे-कृषि सम्बन्धी जानकारी, मौसम सम्बन्धी जानकारी, पशुपालन सम्बन्धी आदि की जानकारी प्राप्त हो जाती है जिससे रेडियो का प्रभाव उनके जीवन पर पड़ता है, जबकि ६२.०० प्रतिशत

ग्रामीण महिलाओं के अनुसार उनके घर पर अब रेडियो का स्थान टेलीविजन, सी.डी. प्लेयर ने ले लिया है जिस कारण रेडियो का कोई प्रभाव उनके जीवन पर नहीं पड़ता है, इसी प्रकार ४०.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने अपना मत प्रस्तुत नहीं किया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर रेडियो अपनी कोई छाप नहीं छोड़ रहा है, रेडियो का अस्तित्व समाज से धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है।

सारणी क्रमांक 04

ग्रामीण महिलाओं पर टी.वी. / दूरदर्शन का प्रभाव

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रभाव पड़ता है	70	70.00
2.	प्रभाव नहीं पड़ता है	17	17.00
3.	जवाब न देने वाली महिलाएँ	13	13.00
	योग -	100	100

उपरोक्त सारणी के माध्यम से मऊगंज जनपद पंचायत के अंतर्गत अध्ययनरत ४०० ग्रामीण महिलाओं से टी.वी. का उनके जीवन पर प्रभाव को जानने की कोशिश की गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ८३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने माना है कि टी.वी. का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, विभिन्न प्रकार के खानपान, रहन-सहन, वेशभूषा आदि वे टी.वी. पर देख कर ही जानकारी प्राप्त करती हैं। जबकि ४७.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं का मानना है कि वे टी.वी. मात्र मनोरंजन के लिए देखती हैं, टी.वी. देखकर वे उसे अपने जीवन में आत्मसात नहीं करती हैं। ४३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने इस प्रश्न पर अपनी कोई भी प्रतिक्रिया नहीं दी। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर टी.वी. अपनी पकड़ बनाए हुए है।

सारणी क्रमांक 05

ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक जीवन पर फिल्मों का प्रभाव

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रभाव पड़ता है	40	40.00
2.	प्रभाव नहीं पड़ता है	48	48.00
3.	जवाब न देने वाली महिलाएँ	12	12.00
	योग -	100	100

उपरोक्त सारणी के माध्यम से मऊगंज जनपद पंचायत के अंतर्गत अध्ययनरत ४०० ग्रामीण महिलाओं से फिल्मों का उनके जीवन पर प्रभाव को जानने की कोशिश की गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ४०.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं के अनुसार फिल्मों का उनके जीवन पर प्रभाव पड़ता है, जबकि ४८.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं के अनुसार वे फिल्म सिर्फ मनोरंजन के लिए देखती हैं, अतः फिल्मों का प्रभाव उनके जीवन पर नहीं पड़ता है, ४२.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने इस प्रश्न पर अपनी प्रतिक्रिया को प्रकट नहीं किया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर फिल्मों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारणी क्रमांक 06

ग्रामीण महिलाओं को इंटरनेट की जानकारी

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	जानकारी है	17	17.00
2.	जानकारी नहीं पड़ता है	70	70.00
3.	जवाब न देने वाली महिलाएँ	13	13.00
	योग -	100	100

उपरोक्त सारणी के माध्यम से मऊगंज जनपद पंचायत के अंतर्गत अध्ययनरत ४०० ग्रामीण महिलाओं से इण्टरनेट की जानकारी और उसका जीवन पर प्रभाव को जानने की कोशिश की गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र की मात्र ४७.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ इण्टरनेट के विषय में सिर्फ सुन रखा है, उसका कोई उपयोग उनके जीवन में सिर्फ मोबाइल के रूप में होता है। ८३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं को इण्टरनेट के विषय में कोई जानकारी नहीं है तथा ४३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने कोई उत्तर नहीं दिया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर इण्टरनेट का कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष-

मऊगंज जनपंचायत के अंतर्गत अध्ययन की गयी ५४.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ मानती हैं कि समाचार-पत्रों से देश-विदेश में क्या हो रहा है उसकी जानकारी उन्हें मिल जाती है।

जिससे उनके जीवन में प्रभाव पड़ता है तथा ३४.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं के अनुसार उनके जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है,इसी प्रकार ४५.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने इस विषय

पर अपने मत स्पष्ट नहीं किए। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर समाचार पत्र अपनी छाप छोड़ रहा है। ८०.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ मानती हैं कि मोबाइल से उनके जीवन शैली पर फर्क पड़ा है, मोबाइल के आ जाने से दूर के रिश्तेदार भी नजदीक लगने लगे हैं, मोबाइल पर ही फिल्मों के गाना सुनने को मिल जाता है, जिससे उनके में मनोरंजन हो जाता है। ४३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने माना कि मोबाइल से उनके जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है तथा ७.०० प्रतिशत महिलाओं ने इस प्रश्न का कोई भी उत्तर नहीं दिया है। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर मोबाइल अपनी गहरी छाप छोड़ रहा है।

मऊगंज जनपंचायत के अंतर्गत अध्ययन की गयी २८.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने माना कि रेडियो से उन्हें विभिन्न प्रकार की जानकारी जैसे-कृषि सम्बन्धी जानकारी, मौसम सम्बन्धी जानकारी, पशुपालन सम्बन्धी आदि की जानकारी प्राप्त हो जाती है जिससे रेडियो का प्रभाव उनके जीवन पर पड़ता है, जबकि ६२.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं के अनुसार उनके घर पर अब रेडियो का स्थान टेलीविजन, सी.डी. प्लेयर ने ले लिया है जिस कारण रेडियो का कोई प्रभाव उनके जीवन पर नहीं पड़ता है, इसी प्रकार ४०.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने अपना मत प्रस्तुत नहीं किया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर रेडियो अपनी कोई छाप नहीं छोड़ रहा है, रेडियो का अस्तित्व समाज से धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है।

८३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने माना है कि टी.वी. का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, विभिन्न प्रकार के खानपान, रहन-सहन, वेशभूषा आदि वे टी.वी. पर देख कर ही जानकारी प्राप्त करती हैं। जबकि ४७.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं का मानना है कि वे टी.वी. मात्र मनोरंजन के लिए देखती हैं, टी.वी. देखकर वे उसे अपने जीवन में आत्मसात नहीं करती हैं। ४३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने इस प्रश्न पर अपनी कोई भी प्रतिक्रिया नहीं दी। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर टी.वी. अपनी पकड़ बनाए हुए है।

४०.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं के अनुसार फिल्मों का उनके जीवन पर प्रभाव पड़ता है, जबकि ४८.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं के अनुसार वे फिल्म सिर्फ मनोरंजन के लिए देखती हैं, अतः फिल्मों का प्रभाव उनके जीवन पर नहीं पड़ता है, ४२.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने इस प्रश्न पर अपनी प्रतिक्रिया को प्रकट नहीं किया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर फिल्मों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र की मात्र ४७.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ इण्टरनेट के विषय में सिर्फ सुन रखा है, उसका कोई उपयोग उनके जीवन में सिर्फ मोबाइल के रूप में होता है। ८३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं को इण्टरनेट के विषय में कोई जानकारी नहीं है तथा ४३.०० प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने कोई उत्तर नहीं दिया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मऊगंज जनपद पंचायत की अध्ययनरत अधिकांश ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर इण्टरनेट का कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है।

सुझाव-

१. ग्रामीण महिलाओं को इण्टरनेट की जानकारी देना आवश्यक है।

२. ग्रामीण महिलाओं में जनसंचार माध्यमों के प्रति रुचि जागरुक हो, सरकार को ऐसा प्रयास करना चाहिए।

३. टेलीविजन पर फ्री चैनलों को बढ़ावा देना होगा, जिससे उनकी पहुँच हर ग्रामीण महिलाओं तक पहुँच सके।

४. ग्रामीण क्षेत्रों में डी.टी.एच. सर्विस को अधिक से अधिक मुफ्त करना होगा ताकि डी.टी.एच. हर ग्रामीण के घर तक पहुँच सके ।

संदर्भ-

१. डॉ. मुश्ताक अली (१९९७), *आधुनिक पत्रकारिता,* अलख प्रकाशन आगरा
२. डॉ. हरिमोहन (२००४) *रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता,* साहित्य प्रकाशन,आगरा
३. डॉ. हरिमोहन (२००४) *रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता,* साहित्य प्रकाशन,आगरा
४. अग्निहोत्री गुरू रामप्यारे, (विक्रमी संवत २०४०) *विन्ध्य प्रदेश का इतिहास,*आलोक प्रेस, रीवा
५. जवरीमलल पराख (२००४), *जनसंचार के सामाजिक संदर्भ,* अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
६. राय बी.एस. (२००९), *सामाजिक अनुसंधान की विधियाँ,* साहित्य भवन, आगरा
७. डॉ. अर्जुन तिवारी (१९९९), *जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता,* साहित्य भवन, आगरा
८. अर्जुन तिवारी (१९९५), *ई-जर्नलिज्म,* साहित्य भवन, आगरा.